THE

PARLIAMENTARY DEBATES

(Part II—Proceedings other than Questions and Answers)

OFFICIAL REPORT

Vol. I First Day of the Third Session of First Parliament of India No. 1

HOUSE OF THE PEOPLE

Wednesday, 11th February, 1953

The House met at Half Past Three of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER (SHRI M. A. AYYANGAR) *in the Chair*]

QUESTIONS AND ANSWERS

(No Questions: Part I not published)

MEMBERS SWORN

Shri Manganlal Bagdi (Mahasamund).

Shrimati Minimata (Bilaspur—Durg—Rajpur—Reserved—Sch. Castes).

PAPERS LAID ON THE TABLE

PRESIDENT'S ADDRESS

Secretary: I beg to lay on the Table a copy of the President's Address to both Houses of Parliament assembled together this afternoon.

राष्ट्रपति : संसद् के सदस्यो, नौ महीने हुए जब हमारे संविधान के अनुकूल निर्वाचित प्रथम भारत गणराज्य संसद के सदस्यों के रूप में आप का मैं ने स्वागत किया था। तब से आप की बड़े भार वहन करने पड़े हैं और घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार की कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा है। आज जब यहां हम समवेत हो रहे हैं हमे अपने देश के भाग्य में पूरा विश्वास है तथा यह आश्वासन

है कि अपने परिश्रम के परिणामस्वरूप हमारे लोग उस ध्येय की ओर बढ़ रहे हैं जिसे कि हम ने अपने सामने रखा है। इन नौ महीनों में औद्योगिक और कृषिक दोनों ही प्रकार के अनेक क्षेत्रों में प्रगति हुई है और उस पंचवर्षीय योजना को हम ने अन्तिम रूप दे दिया है जिस ने कि आगामी वर्षों में हमारी प्रगति की दिशा का चित्रण कर दिया है। अब हमारा यह काम है कि उस पथ पर हम बढ़े चलें और जो प्रतिज्ञा अपनी जनता से की है उस को कार्यान्वित और पूरा करें। यह कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि पुरानी और नयी अनेक समस्याओं की भीड़ हम पर सर्वदा ही छा जाने के लिये प्रस्तुत रहती है और हमारी सामर्थ्य और साधनों की अपेक्षा हमारी इच्छायें बहुधा ज्यादा तेज दौड़ लगाती हैं।

इस समय जब कि हमें अपने नेताओं के सारे अनुभव और बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है यह दुर्भाग्य की बात है कि अपने ज्येष्ठ राजनायकों में से अत्यन्त प्रमुख और लगन वाले एक राजनायक को हम ने खो दिया है। बड़े दुःख के साथ मैं ने यह सुना कि बड़े सवेरे कल श्री एन० गोपालस्वामी आयंगर की मृत्यु हो गई। अपने भरे पूरे जीवन में उन्होंने अनेक उच्च पदों को दुर्लभ योग्यता से सुशोभित किया था। अपना स्वास्थ्य तथा अपना आराम, जिस के कि वह पूरी तरह मुस्तहक हो चुके थे, उस का विचार न कर के